जादू से घबराएँ नहीं बल्कि शरई इलाज कराएँ

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ कर पूछा कि आप को कोई दुख है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हां, तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने यह दुआ पढ़ कर दम कियाः

''अल्लाह के नाम से आप को दम करता हूं हर उस चीज से जो आप को तकलीफ देती है और हर जानदार के शर से या हसद करने वाले की बुरी नज़र से। अल्लाह आप को शिफा देगा, अल्लाह के नाम से आप को दम करता हूं'' (मुस्लिम, मुसनद अहमद, १,२८,५६, ५८, ७५)

अल्लाह हम सब का स्वामी और पालनहार है वही नफा नुकसान का मालिक है, सेहत व बीमारी वही देता है कोई ऐसा मर्ज नहीं है जिस का अल्लाह ने एलाज न बताया हो, मौजूदा दौर में जादू टोना ने एक खतरनाक मर्ज़ की शक्ल धारण कर ली है और जादू टोना का एलाज करने वाले निराधार बातों से सीधे सादे लोगों को भ्रमित और उनके अक़ीदे में सेंध लगाने का प्रयास करते हैं। इस में कोई शक नहीं कि जादू टोना और बुरी नज़र का लग जान एक हकीकत है लेकिन इसलाम ने इसके निवारण और तोड़ व बचाव के लिये तरीक़े भी बताए हैं। अल्लाह का यह उपकार है कि जादू टोना लगने से पहले और बाद में स्वयं कोई भी शख्स अपना और दूसरों का भी एलाज कर सकता है।

ऊपर की हदीस में यही बात कही गई है कि जब अल्लाह के रसूल को इस मर्ज की शिकायत हुई तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उपर्युक्त दुआ पढ़ कर दम किया। इस हदीस से पता चलता है कि जादू टोना और बुरी नजर लग जाने का एलाज शरई तरीक़े से करना चाहिए और वह तमाम तरीक़े अपनाए जा सकते हैं जो शरई तौर पर जायज़ हैं लेकिन इस बात का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है कि हम कोई ऐसा तरीक़ा न अपनाएं जो हराम हो क्योंकि हराम चीज़ से एलाज करना हराम है। आज जादू टोना में जादू ग्रस्त के साथ जो कुछ भी किया जाता है वह अकहनीय और अफसोसनाक व दुखद है। इस लिए हमें ऐसे लोगों के पास जाने से बचना चाहिए। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो किसी काहिन के पास गया और उसकी कही हुई बात की पुष्टि की तो उसने उस चीज़ का इन्कार किया जो पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल की गई है। एक हदीस में है कि अगर कोई शख्स किसी काहिन या नुजूमी के पास आ कर उससे कोई बात पूछता है फिर उसकी बात की पुष्टि करता है तो उसकी चालीस दिनों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी।

इस लिये हमें ऐसे हराम काम से बचना चाहिए जो इन्सान की दुनिया और आखिरत बर्बाद और आस्था को बिगाड़ता हो। अल्लाह तआला हम सबको जादू टोना जैसे महा पाप से बचाए और इस हराम व घातक बीमारी को खतम फरमा दे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

अक्टूबर 2020 वर्ष 31 अंक 5

सफ़रुल मुजफ्फर 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली सलफ़ी

संपादक

एहसानुल् हक़्

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. जादू से घबराएं नहीं ... 2
2. भूक व प्यास की तकलीफ और हमारी... 4
3. कुरआन इन्सान को संबोधित करता है 10
4. अनाथ और अनाथों के संरक्षक 11
5. इस्लाम की खूबियाँ 13
6. धार्मिक ज्ञान और इतिहास का महत्व 15
7. चमन अपना बहुत है याद आता 17
8. कलिमए तौहीद की फज़ीलत 18
9. प्रोफ़ेसर डा० ज़ियाउर्रहमान का इन्तेक़ाल 20
10. मस्जिदें खुल जाने के बाद बचाव... 21
11. ईमान क्या है 23
12. एलाने दाख़िला (अल माहदुल आली) 24
13. कुरआन करीम की खूबियाँ 25
14. इस्लाम में जानवरों के अधिकार 27
15. विज्ञापन 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

भूक व प्यास की तकलीफ और हमारी ज़िम्मेदारियाँ

असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

निसन्देह इंसान समाज में एक साथ रहने को पसन्द करता है समाजी ज़िन्दगी में एक इंसान विभिन्न चूनौतियों और हालात और अवस्थाओं से गुज़रता है कभी ज़िन्दगी में खुशियों भरे छण होते हैं तो कभी ज़िन्दगी दुख व दर्द से दोचार हो जाती है हमारे पास पड़ोस में आबाद लोग भी मुख्तलिफ स्थितियों और हालात से दोचार होते हैं इन हालात में मुसलमान को हुक्म दिया गया है कि वह अपने आस पास मौजूद लोगों का यथा शक्ति ख्याल रखे, उन्हें मदद पहुंचाये और यह कोशिश करे कि कोई भी इंसान उसके पड़ोस में भूखा न सोने पाये। समाज में अगर कुछ लोग लाचार मोहताज गरीब ज़रूरत मन्द हैं तो अमीरों पर ज़रूरी हो जाता है कि उनके दुख दर्द में साझीदार हों, उनका ख्याल रखें, उनके खाने पीने का सामान का प्रबन्ध करें और उनकी मदद के लिये सहयोग करें। अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को जो परेशान हाल लोगों और मुहताजों के लिये खाने पीने की वस्तुएं उपलब्ध कराते हैं या इनके प्रबन्ध का कारण बनते हैं उन्हें ''असहाबुल मयमना'' यानी दाहने हाथ में कर्म पत्र पाने वाला यानी खुश नसीब बताया है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया '' सो उससे न हो सका कि घाटी में दाखिल होता और क्या समझा कि घाटी है क्या? किसी गरदन (गुलाम, लौंडी) को आज़ाद करना या भूक वाले दिन खाना खिलाना, किसी रिश्तेदार यतीम को या खाकसार मिस्कीन को। फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और एक दूसरे को सब्र और रहम की वसीयत करते हैं यही लोग हैं दायें बाजू वाले (खुश्बख़्ती वाले)'' (सूरतुल बलद ११-१८)

अल्लाह ने मिस्कीनों, लाचारों, अनाथों, क़ल्लाशों और मजबूरों को खाना खिलाने को नेक लोगों का तरीक़ा करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः '' बेशक नेक लोग वह जाम पियेंगे जिसकी आमेज़िश काफूर की है जो एक चश्मा है जिससे अल्लाह के बन्दे पियेंगे उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे) जो नज़र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों तरफ फैल जाने वाली है और अल्लाह तआला की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं मिस्कीन, यतीम और क़ैदियों को। हम तो तुम्हें सिर्फ अल्लाह की रिज़ामन्दी के लिए खाना खिलाते हैं, न तुम से बदला चाहते हैं न शुक्रगुज़ारी। बेशक हम अपने परवरदिगार से उस दिन का खौफ करते हैं जो उदासी और सख्ती वाला होगा पस अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और खुशी पहुंचाई और उन्हें उनके सब्र के बदले जन्नत और रेशमी लिबास अता फरमाये'' (सूरतुल इन्सान ५१२)

भूखे को खाना खिलाना और प्यासे को पानी पिलाना अत्यन्त महान बेहद अच्छा और हद दरजा नेक

काम है यही कारण है कि हदीसों की संग्रह में पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जगह जगह इस नेक अमल पर मुसलमानों को उभारा है और इस काम को करने पर जन्नत में प्रवेश का सबब करार दिया है। बरा बिन आज़िब रजि० बयान करते हैं कि एक देहाती अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहा ऐ अल्लाह के पैगम्बर मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाखिल कर दे आपने फरमाया : ...गुलाम को आज़ाद करो या उसकी आज़ादी में सहयोग करो, उस दिहाती ने पूछा क्या यह दोनों एक ही अमल नहीं हुए? आपने फरमाया नहीं। अत्क़े नसमा का मतलब है कि अकेले गुलाम को आज़ाद करो और फक्कू र-क़-बा का मतलब यह है कि उसकी क़ीमत की अदायगी में मदद करो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "अगर तुम्हारे अन्दर इसकी सकत न हो तो भूखे को खाना खिलाओ और प्यासे को पानी पिलाओ" (मुसनद अहमद ४/२६६ अल्लामा अलबानी ने मिश्कातुल मसाबीह की तख़रीज हदीस न० ३३८४ में इसे सहीह करार दिया है) इस वक़्त इसकी शक्ल यह है कि लोगों को क़र्ज़ से आज़ाद करके उनको राहत पहुंचायी जाये।

निसन्देह मानवता तो यही है कि इंसान अपने पास पड़ोस और समाज में मौजूद ग़रीबों की खबर गीरी करे और यह प्रयास करे कि कोई भी इंसान भूखा न सोने पाये क्योंकि अगर आप किसी फक़ीर और गरीब इंसान का पेट भरने का सबब बनते हैं और उसके खाने का प्रबन्ध करते हैं तो अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस काम को अत्यन्त प्रिय करार दिया है अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के नज़दीक सबसे बेहतर अमल यह है कि आप किसी मुसलमान के लिए खुशी का सबब फराहम कर सकें। उससे कोई मुसीबत दूर कर सकें उसके कर्ज़ को अदा कर दें या उसके भूक को भगा दें" (अल मोजमुल कबीर, लेखक : तबरानी रह० १२/४५३ अल्लामा अलबानी ने इसे सहीहुत्तरग़ीब वत्तरहीब ६५५ में सहीह करार दिया है)

उपर्युक्त क़ुरआनी दलीलों और पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथनों से इस बात का अच्छी तरह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि किसी भूखे इंसान को खाना खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना गरीब, मिस्कीन को मदद फराहम करना और उनको खाना खिलाना और कर्ज़दार के कर्ज़ को अदा करना कितना महान काम है कि इस पर अल्लाह के प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे सबसे बेहतर अमल करार दिया है और भलाई के कामों के पाबन्द इंसान को जन्नत की खुशखबरी दी है।

अगर हम इस नेक काम की पाबन्दी करते हैं तो हम ढेर सारे सवाब से लाभान्वित होते हैं लेकिन अगर हम गरीबों मुहताजों और ज़रूरतमन्दों की मदद नहीं करते और मुश्किल वक़्त में उनके काम नहीं आते और एक वक़्त उनके लिए रोटी का प्रबन्ध नहीं करते तो हमें इस बात से आगाह रहना चाहिए कि कुरआन व हदीस में ऐसे लोगों के लिए सख्त चेतावनियां आई हैं।

अगर हमने सामर्थ के बावजूद भी किसी भूखे को खाना नहीं खिलाया

होगा तो हमारे इस कोताही के बारे में अल्लाह तआला हमसे कियामत के दिन पूछ ताछ करेगा और इस कोताही पर हमारी डांट डपट होगी। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ''अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कहेगा ऐ मेरे बन्दे मैं बीमार हुआ लेकिन तूने बीमार पुरसी नहीं की। बन्दा कहेगा मैं क्यों कर भला तेरी बीमार पुरसी करता जबकि तू दोनों संसार का पालनहार है। अल्लाह कहेगा क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरा अमुक बन्दा बीमार था लेकिन तूने उसकी इयादत नहीं की। क्या तुझे नहीं मालूम कि अगर तू उसकी अयादत करता तो मुझे उसके पास पाता। ऐ मेरे बन्दे! मैंने तुझ से खाना तलब किया लेकिन तूने खाना नहीं दिया। बन्दा कहेगा परवरदिगार मैं क्योंकर भला तुझे खाना खिलाता तुम तो दोनों संसार के पालनहार हो। अल्लाह कहेगा क्या तुझे पता नहीं था कि मेरा फुलां बन्दा भूखा था लेकिन तूने उसे खाना नहीं खिलाया क्या तुझे मालूम नहीं था कि अगर तुम उसे खाना खिलाते तो मुझे उसके पास पाते।'' (सहीह मुस्लिम २५६९)

यह शिकायत, डांट डपट और पूछ ताछ अल्लाह तआला की तरफ से होगी कि उसका एक बन्दा भूखा रहा और दूसरे ने समृद्ध और मालदार होने के बाद भी उसकी खबर नहीं ली और उसका हाल नहीं मालूम किया, अगर ऐसा है तो उसके मोमिन होने की कोई गारन्टी नहीं है।

अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे इंसान के ईमान के कमाल की नफी फरमाई (अर्थात उस का ईमान मुकम्मल नहीं है)।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमया: '' वह शख्स मोमिन नहीं जो खुद तो पेट भर खाकर संतुष्ट होकर रहता है लेकिन उसके बगल में उसका पड़ोसी भूखा रहता है।'' (मुसतद्रक हाकिम, अल्लामा अलबानी ने सहीहुल अदबिल मुफरद में इस हदीस को सहीह करार दिया है।)

अगर आपके पास ज़रूरत से ज़्यादा पानी है फिर भी आप ज़रूरत मन्दों और मुसाफिरों को इससे महरूम रखते हैं तो आप को दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी गयी है। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो का बयान है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तीन तरह के लोग ऐसे होंगे जिनसे अल्लाह तआला न तो बात करेगा न उन्हें क्यामत के दिन देखेगा और न उनका तज़कीया फरमायेगा। और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब होगा। उनमें एक इंसान वह होगा जिसके पास ज़रूरत से ज़्यादा पानी होगा इससे वह मुसाफिरों को रोकता होगा तो अल्लाह क़यामत के रोज़ उससे कहेगा कि आज के रोज़ मैं अपने फज़्ल और एहसान को उसी तरह से रोक लूंगा जैसा कि तुमने अपनी इज़ाफी चीज़ को रोक लिया था जिसको हासिल करने में तुम्हारे हाथों का कोई दखल नहीं था'' (सहीह बुख़ारी ७४४६, सहीह मुस्लिम १७३)

इस्लामी शरीअत ने आम हालात में भी किसी को खाना खिलाने को प्रशंसनीय और नेक काम क़रार दिया है इस बारे में क़ुरआन व हदीस के अन्दर विभिन्न तरीक़े की

फ़ज़ीलतें आई हैं। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो अन्हुमा का बयान है कि एक शख्स ने रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा इस्लाम सबसे बेहतर है? आपने फरमाया खाना खिलाओ और सबको सलाम करो जिसे जानते हो उसे भी और जिसे नहीं जानते हो उसे भी'' (सहीह बुख़ारी १२, २८, १२३६ सहीह मुस्लिम ३६)

किसी को खाना खिलाना और उसकी भूख मिटाना इतना नेक काम है कि अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हदीसों में ऐसे शख्स को जन्नत की खुशखबरी सुनाई है और फरमाया हैः ''जन्नत में कुछ ऐसे बालाख़ाने (कोठे) हैं जिनके अन्दर से बाहरी हिस्सा और बाहर से अन्दर का हिस्सा दिखाई देता है अल्लाह तआला ने उन्हें उन लोगों के लिये तैयार कर रखा है जो खाना खिलाते हैं नरमी से बात चीत करते हैं लगातार रोज़ा रखते हैं और जब लोग सो रहे होते हैं तो वह रातों में नमाज़ पढ़ते हैं। (मुसनद अहदम ५/३४५ शोबुल ईमान, लेखकः इमाम बैहक़ी ३८६२, अल्लामा अलबानी ने सहीहुल जामे में इसे शवाहिद (साक्ष्य) की बुनियाद पर हसन क़रार दिया है।

यही नहीं अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुद इन खूबियों से सुसज्जित थे। उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा अल्लाह तआला कभी भी आपको अपमानित नहीं कर सकता क्योंकि आप रिश्ते नाते को जोड़ते हैं सच्चे हैं, बेसहारों का सहारा बनते हैं गरीबों को देते हैं मेहमान नवाज़ी करते हैं, और हक़ के मामलात में सहयोग करते हैं। (सहीह बुख़ारी ३ सहीह मुस्लिम १६०)

सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे ''तुम में से सबसे बेहतर वह हैं जो खाना खिलाते हैं'' (मुसनद अहमद ६/१६ शैख अलबानी ने सिल-सिल-ए सहीहा ४४ में इसे सहीह क़रार दिया है।

पड़ोस में आबाद लोगों का ख़्याल रखना और उनके दुख दर्द में शरीक होना और बुनियादी ज़िन्दगी के साधन न होने पर उनको खाना खिलाने का सबब बनना अत्यंत श्रेष्ठ अमल है। यही वजह है कि संसार के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर वक़्त इस बात का ख्याल रखते थे कि आप के सहाबा किराम में कोई भूखा न रह पाए। आप अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो के वाक़ए पर ग़ौर कीजिए कि वह सिददीक और फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो अन्हुमा से किसी आयत की तफसीर पूछते हैं। यह दोनों महान स्थान रखने वाले सहाबा किराम अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की मंशा और मक़सद भूख की शिददत को समझ नहीं पाते और यह दोनों बुजुर्ग हस्ती आयत का मतलब बता कर आगे बढ़ जाते हैं। इसी दौरान रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो के पास से होता हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो के चेहरे की मुरझाहट देख कर पहचान लेते हैं कि यह भूख और प्यास की शिददत के मारे हुए हैं। इसी लिये आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें अपने घर लाते हैं और उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा

से पूछते हैं कि खाने के लिये कुछ हो तो पेश करें। उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बताती हैं कि खाने की कोई चीज़ तो नहीं हां थोड़ा सा दूध है जिसे फलां औरत ने आप को तोहफे में भेजा है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतने दूध को पूरे अस्हाबे सुफ्फा को पिलाते हैं और अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को भी पिलाते हैं। (सहीह बुख़ारी ६४५२)

यह था रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श, इस के अलावा आपने विभिन्न हदीसों में सहाबा किराम को भी इस बात की ताकीद की है कि वह समाज में मौजूद गरीबों और मिस्कीनों का ख्याल रखें और खास तौर से पड़ोसियों की खबरगीरी करें कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वह भूख का शिकार हों और आप समृद्ध होकर ज़िन्दगी बसर कर रहे हों। अबू ज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहो अन्हो को एक मौके पर नसीहत करते हुए रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था ''जब तुम सालन बनाओ तो शोरबा ज़्यादा कर दिया करो और अपने पड़ोसी की ख़बर रखा करो''। (सहीह मुस्लिम २६२५)

आज मजबूर की हर तरह से मदद करना जहां महान काम है वहीं इससे कोताही करना धार्मिक राष्ट्रीय, समुदायिक पाप है जिसका न कोई प्रायिश्चित है, न भरपाई अगर यह वक़्त गुज़र गया तो इसके परिणाम दुनिया और आख़िरत में भयानक हैं।

सहाबा किराम की मुक़द्दस जमाअत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशिक्षण में विकसित हुई थी। इस वजह से सहाबा किराम की ज़िन्दगी में त्याग, कुर्बानी और खुद भूखे रह कर गरीबों मोहताजों को खाना खिलाने के ऐसे अनमोल किस्से मिलते हैं कि मौजूदा वक़्त की भौतिकवादी मानसिकता इसे मानने से असमर्थ है। आप कल्पना कीजिए कि एक मेहमान अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाजिर होता है। आप के पास उसे खिलाने के लिये कुछ नहीं होता। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूछते हैं कि इसे कौन अपना मेहमान बना सकता है? एक अंसारी खड़े होते हैं और इस मेहमान को अपने साथ ले जाते हैं। जब घर पहुंचते हैं और अपनी बीवी से पूछते हैं कि खाने के लिये क्या कुछ है? बीवी बताती हैं कि घर में बच्चों के खाने के सिवा कुछ नहीं है। मियां बीवी में सहमति बनती है कि आज बच्चों को भूखा सुला दें गे और मेहमान जब खाने बैठेंगे तो चिराग बुझा देंगे, फिर इसी तरह हुआ। मेहमान ने रात का खाना खाया। जब मेहमान और मेज़बान सुबह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरबार में पहुंचे तो अल्लाह ने मेज़बान मियां बीवी की अदा से खुश होकर इस अमल को कुरआन शरीफ में महफूज़ कर दिया और आयते करीमा ''वह अपने आप पर दूसरों को वरीयता देते हैं अगर्चे वह ज़रूरत मन्द होते हैं'' (सहीह बुख़ारी ४८८६) सहीह मुस्लिम २०५४, तफसीर इबने कसीर, ४/३३८, असबाबुन नुजूल लेखकः वाहिदी पृष्ठ-१६२) नाज़िल फरमाया।

आखिर में चलते चलते अबू बक्र सिददीक रज़ियल्लाहो अन्हो के बारे में बयान कर दिया जाए कि वह इस नेक काम में कितना पाबन्दी किया करते थे और इन्हें रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिद्दीक का खिताब क्यों दिया था कि वह एक ही दिन में बड़े बड़े भलाई और नेकी का काम अंजाम

देते थे और इन कामों में गरीबों और ज़रूरतमन्दों को खाना भी खिलाना होता था। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो की रिवायत की गई हदीस के मुताबिक एक रोज़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम में से आज रोज़े से कौन है? सिददीक़ अकबर ने कहा मैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम में से आज किसने जनाज़े में शिर्कत की? अबू बक्र सिददीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहा, मैं, रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा तुम में से आज किसने खाना खिलाया है? अबू बक्र रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहा मैंने, जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा कि तुम में से आज किसने मरीज़ की इयादत की है? अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा मैंने यह जवाब सुन कर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब यह सभी खूबियां इन्सान के अन्दर जमा हो जाएं तो वह जन्नत में अवश्य दाख़िल हो गा। (सहीह मुस्लिम १०२८)

तारीख़ की विश्वसनीय किताबों में मौजूद हमारे पूर्वजों के इस और इस तरह के हजारों वाक़आत हमें बताते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके बाद सहाबा किराम की पवित्र जमाअत ने नेक काम को न केवल अपने व्यवहारिक जीवन में करके दिखाया बल्कि ज़रूरत मन्दों, फकीरों, यतीमों और भूखों को खाना खिलाने को अपना तरीक़ा बनाया और उन्हें मालूम था कि यह एक प्रशंसनीय और अत्यंत मुबारक काम है और कभी कभार फर्ज़ है। अगर हम मुहताजों पर खर्च करेंगे, उन्हें खाना खिलाएंगे और उनकी ज़रूरतों का ख्याल रखेंगे तो अल्लाह तआला इसकी वजह से हमें रोज़ी देगा और फरिश्ते हमारे लिये दुआएं करेंगे ''यह शख्स जो कुछ ख़र्च कर रहा है इसका बदला अता फरमा'', इसके विपरीत अगर हम अल्लाह की तरफ से दिये गए माल में से किसी पर ख़र्च नहीं करेंगे और इसको सैंत सैंत कर रखेंगे और लालच व बख़ीली का शिकार रहेंगे तो फरिश्ते भी हमारे लिये बद दुआ करेंगे कि ''यह खर्च नहीं करता तो ऐ अल्लाह इस से तू अपनी नेमतों को छीन ले''। (सहीह बुख़ारी ३६३६-सहीह मुस्लिम १६२८)

यही वजह है कि हदीस में आया है कि ''तुम्हारे कमज़ोरों की वजह से तुम्हारी मदद की जाती है और उनकी वजह से तुम को रोज़ी दी जाती है।'' और दूसरी रिवायत में है ''अपने कमज़ोरों और हाजतमन्दों में मुझे ढूंढा करो।''

मौजूदा वक़्त हमारे लिये आजमाइश व अज़ाब और चेतावनी का वक़्त है। कोरोना वायरस का है, ताला बन्दी का है भूखमरी का है, ऐसे में इस संकट और मुसीबत को दूर करना सबका कर्तव्य है वर्ना मामला कन्ट्रोल से बाहर जा सकता है और लाखों इन्सान भूख की शिददत से शिकार हो कर बहुत सी समस्याएं खड़ी कर सकते हैं इसलिये ऐसे नाजुक हालात में काबू पाने, अपने रब को राज़ी करने और राष्ट्र और इन्सानियत को इस संगीन संकट से निकालने के लिए और हरकत व अमल और सहयोग और मदद का काम तेज़ी से शुरू कर दें और अपने आप को हर तरह की शरई, मेडिकल और प्रशासनिक निर्देशों की रोशनी में काबू और कंट्रोल में रखें और दूसरों को यथा-शक्ति रखवाएं, खुदा खैर करे।

❑ ❑ ❑

कुरआन इन्सान को संबोधित करता है

इब्ने अहमद नक़वी

कुरआन मजीद आसमानी किताबों में वह सबसे व्यापक, मुकम्मल और सर्वमान्य किताब है जिसकी सेहत और सच्चाई का स्वीकार अन्य लोगों को भी करना पड़ा है। अल्लाह की यह किताब किसी एक वर्ग या क्षेत्र के लिये नहीं है बल्कि यह पूरी मानवता को संबोधित करती है कुरआन "ऐ इन्सानों" कह कर संबोधित करता है यानी पालनहार अपनी सृष्टि को पुकारता है और उसका रसूल (पैगम्बर) उसके कलाम अर्थात वाणी को दुनिया के सामने पेश करता है और जाहिर है कि जब किसी को संबोधित किया जाता है, उसे कुछ बताया जाता है तो इस का मतलब यही होता है कि जो बात कही गई है उस पर गौर किया जाए उसे समझा जाए और समझ कर उस पर अमल किया जाए। कुरआन मजीद ने चिन्तन करने पर जगह जगह जोर दिया है। संसार की संरचना पर गौर करने का आदेश दिया है। खेती बाड़ी, पेड़ पौदे, बारिश, बादल, पहाड़ और समुद्र के वजूद और अमल पर अक़्ल दौड़ाने का निर्देश दिया है। जेहन को खुला रखने, खुली आखों से देखने और सकारात्मक अन्दाज़ से चिन्तन करने का पाठ दिया है। इस आदेश और चेतावनी का मक़सद केवल एक है कि इन्सान अपने पालनहार को पहचाने और सीधे मार्ग पर अग्रसर हो। अल्लाह के कलाम को समझने और समझाने का दौर उसके प्रारंभ से शुरू हो गया था। तौरात के विपरीत जो बनी इस्राईल के मसीहा और उपकारक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई और एक शुक्रगुज़ार कौम को दी गई जबकि कुरआन मजीद एक ऐसी कौम पर पेश किया गया जो अज्ञानता और उजडपन में अग्र थी और उजडता उसका स्वभाव था। उसके उजडता का अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह जिस व्यक्ति को सच्चा और एमानतदार कहती थी और नबी बना कर भेजे जाने से पहले उसकी सच्चाई और एमानतदारी का खुल्लम खुल्ला एतराफ कर चुकी थी जब उस सम्माननीय शख्स ने उसे सत्य की तरफ बुलाया तो उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया। ऐसी कौम से कोई ऐसी बात कहना जिसके अर्थ अस्पष्ट हों बिलकुल फुजूल बात थी इस लिये कुरआन ने सबको बताया कि कुरआन में कोई सन्देह नहीं है और जो कुछ कहा जा रहा है उस पर गौर करो इस लिये जिन लोगों को अल्लाह ने सहीह ढंग से सोचने और समझने की तौफीक़ दी थी उन्होंने इस्लाम कुबूल किया और सच्चाई के प्रतीक एवं रक्षक बने और जो लोग अहंकार का शिकार हुए वह गुमराही में गुम हो गए। दीन को समझने का यह जजबा सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम में सबसे ज्यादा था उन्होंने इसे खुद समझा और दूसरों को भी समझाया।

❑ ❑ ❑

अनाथ और अनाथों के संरक्षक

ख़ुर्शीद आलम मदनी

इस्लाम ने समाज के कमजोरों और गरीबों के बारे में यह निर्देश दिया कि उनके वजूद को बोझ न समझा जाये बल्कि उनके दुख दर्द को महसूस करते हुए उन्हें गले लगाया जाये पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुमहें जो रोज़ी दी जा रही है और तुम्हारी जो मदद की जा रही है वह इन कमजोरों की वजह से हो रही है। (अबू दाऊद)

समाज का सबसे दयनीय वर्ग बाप के दया करूणा के क्षाँव से वंचित अनाथ है। इस्लाम के आने से पहले अनाथों (यतीमों) के साथ ज़ालिमाना व्यवहार किया जाता था वह बच्चा पूरी ज़िन्दगी ठोकर खाता था और खानदान व समाज की शफक़त व मुहब्बत से महरूम (वंचित) रहता था उसे बाप की वरासत का हक़दार नहीं समझा जाता था उसके सरपरस्त उसकी जायदाद हज़्म कर जाते थे, अरब के बड़े क़बाइल और उनके सरदारों का व्यवहार बड़ा वहशियाना था, इन यतीमों के साथ बदसुलूकियाँ हो रही थीं, नाइंसाफियां हो रही थीं, उनका कोई रखवाला नहीं था, यतीम बच्चियों की जायदाद हड़पने की निय्यत से वह उससे शादी कर लेते थे उनका कोई पुर्सानेहाल नहीं था लेकिन उन की दौलत पर सबकी निगाह होती थी। ऐसे संगीन माहौल में जबकि यह ज़ालिम दुनिया यतीमों के साथ भी रहम करना नहीं जानती थी इस्लाम के सूरज का उदय हुआ और यतीमों के संरक्षक, सेवकों के मददगार, बेवाओं के रखवाले पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सन्देशवाहक बना कर भेजे गये फिर इसके बाद मजलूम वर्ग के साथ जुल्म की दास्तान बन्द हो गई, इसकी खुशहाली का दौर आया और ज़िन्दगी में बाग़ व बहार पैदा हुई और ऐसा इस लिये हुआ कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यतीमों के दर्द को जानते थे और जिसे सब से पहले अल्लाह तआला ने संबोधित करके उनका भूतपूर्व याद दिलाया ''आप भी यतीम थे इसलिये आप किसी यतीम पर सख्ती न करें''

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यतीमों के बारे में अल्लाह तआला का यह पैगाम सुनाया कि यतीमों के मालों में ख़्यानत न करो बालिग़ होने के बाद उनके माल उनके हवाले कर दो। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और यतीमों को उनका माल दे दो'' (सूरे निसा-२) ''और उनके बड़े हो जाने के डर से उनके मालों को जल्दी जल्दी फ़ुजूल खर्चियों में तबाह न करो''। (सूरे निसा)

यतीमों के रखवाले उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जो वह अपने मरने के बाद अपने बच्चों के साथ किए जाने को पसन्द करते हैं। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''जो लोग नाहक़ यतीमों का माल खाते हैं वह अपने पेट में आग ही भर रहे हैं और अनक़रीब वह दोज़ख में जाएंगे। (सूरे निसा-१०)

साथ ही पैगम्बर हज़रत मुहम्मद ने यहीमों के साथ अच्छा

व्यवहार करने को प्रभावी अन्दाज़ में बयान करते हुए सहाबा किराम के जेहन व दिमाग में यतीमों से मुहब्बत और उनकी देखभाल का जज़्बा पैदा करने की प्रेरणा दी।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सबसे बाबर्कत व मिसाली घराना वह है जिस में कोई यतीम हो और उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता हो और वह घर सबसे बुरा है जिस घर में यतीम के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है (इब्ने माजा-३६६९) पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सुनो जो लोगा यतीमों की देखभाल करते हैं वह जन्नत में मेरे साथ होंगे (बुख़ारी) पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० ने फरमायाः ऐ अल्लाह मैं दो कमज़ोरों के हुकूक की अदायगी के बारे में लोगों को बहुत डराता हूं वह औरत और यतीम हैं। (नेसई)

व्यवहारिक तौर पर आपने समाज के कमज़ोरों, बाप के प्रेमभाव से वंचित बच्चों को समाज के ज़ालिम लोगों से उनका अधिकार दिलाया, इस्लाम के शुरूआती दौर में एक मजलूम औरत की मदद की और एक अत्याचारी से इस औरत का हक़ दिलवाया, एक बच्चा अबू जहल की किफालत और देख रेख में था, एक दिन बच्चा फटे पुराने कपड़े में अबू जहल के पास आया और मदद का अनुरोध किया लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया वह कुरैश के सरदारों के पास गया, सब ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाने का मश्वरा दिया, आखिर कार (अन्ततः) वह आप के पास आया और अपनी विपदा को बयान किया सुनते ही आप तुरन्त अबू जहल के पास गये और फरमाया इस यतीम का माल दे दो और उसने तुरन्त उसने उसका माल वापस कर दिया।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने इस अमल से यह पैग़ाम दिया कि समाज की इस्लाह के लिये ज़रूरी है कि समाज के बाअसर लोग किसी जुल्म पर खामूश न रहें (क़ानून की सीमा में रहते हुए) याद रखें कि समाज में बिगाड़ उस वक़्त पैदा होता है जब समाज के बड़े लोग बुराइयां देख कर खामूश हो जाएं, इस व्यवहार शैली से इन्सानों की बस्ती में उलझन पैदा होती है, निर्दोष बच्चे प्रताड़ित होते हैं, मजलूम औरतें कराहती हैं और कमजोर लोग आहें भरते हैं, हक़ व इन्साफ के चिराग टिमटिमाने लगते हैं आप के इन आदेशों, व्यवहार व आचरण ने इतिहास के धारे को मोड़ दिया, विचार शैली की दिशाएं बदल दीं, सहाबा किराम यतीमों को कलेजे से लगाने लगे और उनकी किफालत और पालन पोषण में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगे।

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहो बारे में शहादत के बाद उनकी एक बच्ची की किफालत के लिये कई लोग आगे आए हज़रत अली, हज़रत जाफर और हज़रत जैद बिन हारिसा के बीच मतभेद हो गया उनमें से हर एक की इच्छा थी कि वह इस बच्ची की किफालत करेगा। अल्लहा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कहते हुए इस बच्ची को हज़रत जाफर के हवाले किया कि खाला मां के दर्जे में होती है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ज़रूरत है कि हम यतीमों के बारे में अपनी जिम्मेदारियों को महसूस करें समाज के मालदार लोग अनाथालय काइम करें और इन यतीमों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करें ताकि वह अपनी कौम के लिये लाभाकरी और देश के लिये मिसाली शहरी बन सकें।

इस्लाम की खूबियां

सईदुर्रहमान सनाबिली

क्रय-विक्रय में नर्मी

इस्लाम की नज़र में तिजारत एक काबिले क़द्र पेशा है शर्त यह है कि इस्लाम ने हमें तिजारत के जो नियम और सिद्धांत बताये हैं उनका ख्याल रखा जाये। व्यापार करते वक्त व्यवपारियों और व्यापार से जुड़े लोगों के साथ नर्मी पर बल दिया गया है ताकि मोहताजों और गरीबों की आवश्यकताएं पूरी हो सकें। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने एक शख्स को बख्श दिया जो तुम से पहले था जो बेचने, खरीदने और तकाज़ा करते वक़्त नर्मी किया करता था (सुनन तिर्मिज़ी १३२०, सुनन इब्ने माजा २२०३, यह हदीस सहीह है, देखिए सहीहुल जामे-४१६२)

उस्मान बिन अफ्फान रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना एक शख्स था जो बेचते खरीदते, तकाज़ा करते वक्त नर्मी किया करता था अल्लाह ने इस अच्छी आदत की वजह से उसे स्वर्ग में दाखिल कर दिया। (मुसनद अहमद, ४१०, सुनन नेसई ४६९६, सुनन इब्ने माजा २२०२, शैख अल्बानी ने इस रिवायत को हसन करार दिया है देखिये सहीहुल जामे २४०, सहीहुत तरगीब वत तरहीब १७४३)

परेशान हाल को मोहलत दी जाये मानव समाज का पहिया आपसी सहयोग के बिना चल पाना असंभव है। आपसी मामलात के वक्त लोगों की हालतों का ख्याल रखते हुये उन्हें मोहलत देना और अपने हक़ की मांग करने में नर्मी और खुश दिली का प्रदर्शन करने से बहुत ज्यादा सवाब मिलता है। हुजैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक शख्स मरने के बाद जन्नत में दाखिल हुआ उससे पूछा गया कि तुम कौन सा कर्म किया करते थे उसको स्वयं याद आ गया या उसे याद दिलाया गया उसने कहाः मैं लोगों से माल बेचा करता था और मेरा तरीका यह था कि मैं तंगदस्तों (परेशान हाल) लोगों को मोहलत दिया करता था और थैले और नकद में मौजूद कमी को नजर अन्दाज करता था (सहीह मुस्लिम १५६०)

यतीम का भरण-पोषण

इस्लाम धर्म ने ज़रूरत मन्दों और मोहताजों के साथ मुहब्बत और दया को सम्मान की निगाह से देखता है और उस बच्चे से ज्यादा ज़रूरत मन्द और मोहताज कौन हो सकता है जिसके बचपन में ही उसके मां बाप या केवल उसके पिता का निधन हो जाये ऐसे बच्चे का भरण पोषण (किफालत, देख भाल) को इस्लाम धर्म प्रशंसनीय काम करार देता है बल्कि ऐसे लोगों के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुभ सूचना दी है कि ऐसा शख्स जन्नत में आपके बिल्कुल करीब होगा।

सहल बिन सअ्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फरमाया मैं और यतीम अनाथ की किफालत व भरण पोषण करने वाले जन्नत में यूं होंगे, यह कहते हुये अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी दो उंगलियों से संकेत किया। (सहीह बुखारी १४६७)

बीमार की अयादत बीमार का हाल चाल मालूम करना (इयादत) करना बहुत पुण्य का काम है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मरीज की इयादत करने के लिये जाता है वह लौटने के वक्त तक जन्नत के बाग में रहता है। (सहीह मुस्लिम २५६८)

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने अल्लाह के लिये किसी मरीज या अपने किसी भाई की इयादत की तो अल्लाह की तरफ से पुकारने वाला पुकारता है कि तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है और तेरा चलना अत्यंत मुबारक रहा और तुझे इस की वजह से जन्नत में जगह दी गयी है (सुनन तिर्मिज़ी २००८ इसे शैख अलबानी ने हसन करार दिया है)

अरब के वासी बेटियों और बहनों को अपने लिये अपमान समझा करते थे और उनके साथ गलत रवैया अपनाया करते थे उन्हें जिन्दा दफन कर देते थे लेकिन इस्लाम ने अपने आने के पहले ही दिन से नारी को सम्मान दिया और मां, बहन, बेटी, खाला, फूफी, चाची, दादी, नानी तमाम हैसियतों में नारी को पूर्ण सम्मान दिया। अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके भी तीन बेटियां हों या तीन बहनें हों या दो बेटियां और दो बहनें हों और वह उनका भली भांति (अच्छी तरह) से पालन पोषण करे और उनके बारे में अल्लाह से भय करे तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाखिल करेगा। (सुनन तिर्मिज़ी १८३५, अलअद्बुल मुफरद-७६, शैख अलबानी ने इसे सहीहा ४७५२ में सहीह करार दिया है) इन्सान के लिये मां बाप अकीदत और सम्मान का केन्द्र होते हैं क्योंकि यह मां बाप ही हैं जो उसके वजूद का सबब बनते हैं और हर तरह के दुख को बर्दाश्त करने के बाद उसका पालान पोषण करते हैं। यही वजह है कि इस्लाम धर्म ने माता पिता को सम्माननीय करार दिया है और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने वाले इन्सान को जन्नत में जाने की खुशखबरी सुनायी है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो, उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो जो अपने मां बाप या उनमें से किसी एक को बुढ़ापे में पा ले और फिर भी वह जन्नत में दाखिल न हो सके। (सहीह मुस्लिम २५५१)

जानवरों के साथ अच्छा बर्ताव अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक आदमी ने एक कुत्ते को प्यास की वजह से मिटटी चाटते देखा तो उसने अपना मोज़ा लिया और उसे भिगोकर पिलाने लगा यहां तक कि कुत्ता सैराब हो गया अल्लाह ने इस शख्स के कर्म को कुबूल कर लिया और उसे जन्नत में दाखिल कर दिया। (सहीह बुखारी १७, सहीह मुस्मिल २२४४)

❑ ❑ ❑

धार्मिक ज्ञान और इतिहास का महत्व

नौशाद अहमद

यह ज्ञान और विज्ञान का दौर है, आज के ज़माने में इल्म का मतलब पैसा भी होता है, इस लिये ज्ञान और विज्ञान की अहमियत से किसी भी हाल में इन्कार नहीं किया जा सकता। ज्ञान दो तरह का होता है एक ज्ञान वह होता है जिस से इन्सान दुनिया कमाता है और इसके माध्यम से वह अपनी दुनियावी जरूरतों को पूरी करता है, और इसी के सहारे वह अपने परिवार का पालन पोषण भी करता है। दूसरा ज्ञान वह है जो इन्सान के आखिरत (मरने के बाद के जीवन) से जुड़ा हुआ है। यह ज्ञान इन्सान को मरने के बाद सफलता की ओर ले जाता है। इसी ज्ञान से इन्सान को यह मालूम होता है कि उसको आखिरत में कामयाब होने के लिये क्या करना है और क्या नहीं करना है। उसके पालनहार ने अपनी इबादत के लिये उसको जो तरीक़े बताए हैं वह क्या हैं क्योंकि इस ज्ञान के हासिल किये बगैर वह सहीह तौर पर अपने ध ाार्मिक कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर सकता। अगर वह धार्मिक ज्ञान हासिल नहीं करेगा तो उसे दूसरों का मोहताज बनना पड़ेगा। आज के जमाने में धर्म का ज्ञान हासिल करना कुछ भी मुश्किल नहीं रह गया है सारी चीज़ों का हासिल करना सरल हो गया है। दुनिया की जिस भाषा में चाहे पढ़ सकता है अपने धर्म को और अपने दुनिया में आने के मकसद को जान सकता है। यह इन्सान की जिन्दगी की कामयाबी और नाकामी का आधार है। मरने के बाद हिसाब किताब के वक़्त कोई इन्सान या व्यक्त यह कह कर नहीं बच सकता कि उसको तो अपने धर्म के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं था, संसाधन की कमी नहीं है। दुनिया की हर भाषा में धर्मिक बातों और आदेशों को जानने के लिये बहुत से मैटेरियल मौजूद हैं हमें इस बारे में किसी तरह की कोताही नहीं करनी चाहिए। मां बाप को भी चाहिए कि बच्चों को शुरू ही से धार्मिक ज्ञान दिलाने में भरपूर प्रयास करें।

न धार्मिक ज्ञान की अहमियत से इन्कार किया जा सकता है और न आधुनिक ज्ञान की अहमियत से इन्कार किया जा सकता है।

इतिहास का ज्ञान जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। आज विश्व स्तर पर जिस तरह सहीह इतिहास को गलत बनाने की कोशिश हो रही है वह सब के सामने है। इस सिलसिले में सबसे अफसोसनाक (खेदजनक) बात यह है कि हम लोग खुद अपने इतिहास से अनभिज्ञ और नावाक़िफ़ हैं जबकि इस्लामी इतिहास दुनिया का पहला ऐसा इतिहास है जो सहीह हालत में मौजूद है और जिसके संरक्षण के लिये हमारे पूर्वजों ने अथक मेहनत की है आज इसको भी गलत बनाने की कोशिश हो रही है। यह इतिहास न जानने का ही परिणाम है कि गलत चीज़ों को पढ़ने के बाद हम लोग भ्रमित हो जाते हैं और कुछ लोग इस्लाम और मुसलमानों के

बारे में भ्रमित करने ही में लगे हुए हैं ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम धार्मिक ज्ञान रखने के साथ अपने इतिहास और करन्ट ख़बरों का भी ज्ञान रखें यह वक़्त की एक बड़ी ज़रूरत है। आइये संकल्प करते हैं कि धार्मिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ इस्लामी इतिहास का भी ज्ञान रखेंगे।

इतिहास के अध्ययन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे दीन की रक्षा होती है सहीह और गलत का पता चलता है, इंसान भ्रमित होने से बच जाता है, सच्चाई का दिफा करने का हुनर पैदा होता है, इन्सानी जीवन को हौसला मिलता है। अभूतपूर्व में जो गलतियां हुई हैं उससे बचने का तरीक़ा मालूम होता है सहीह और गलत में अन्तर करने की क्षमता पैदा हो जाती है।

आज के दौर में गलत खबरों और अफ़वाहों को फैलाने का जो चलन शुरू हुआ है ऐसे में इतिहास के अध्ययन की अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है।

अम्न व शान्ति

अम्न व शान्ति इन्सान का बुनियादी अधिकार है, दुनिया के ज़्यादातर इन्सान अम्न व शान्ति चाहते हैं, जब अम्न व शान्ति रहेगी तो समाज का हर वर्ग समृद्ध और खुशहाल रहेगा, उसका कारोबार सहीह रहेगा, बाल बच्चों की शिक्षा को भी सहीह दिशा मिलेगी, भविष्य का रास्ता आसान होगा, योजनाएं बनाने में भी आसानी होगी, बड़े बड़े प्रोजेक्टों को कामबयाबी अम्न व शान्ति के माहौल ही में मिलेगी, संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि हर चीज़ की कामयाबी और नाकामी अम्न व शान्ति से जुड़ी हुई है।

विभिन्न समाजों में बेचैनी और असुख की जो स्थिति है वह कुछ लोगों के अहंकार और स्वार्थ की वजह से है, अहंकार और स्वार्थ को खतम करके ही समाज को सहीह दिशा में ले जाया जा सकता है। स्वार्थ समाज की एक बड़ी और जटिल समस्या है। स्वार्थी हमेशा केवल अपने फायदे की सोचता है वह समाज के दूसरे लोगों के नफा के बारे में कम ही सोचता है, वह अपने मकसद को पूरा करने के लिये हर वह तरीक़ा अपनाता है जो उसे तथाकथित कामयाबी की तरफ ले जाता है। लेकिन सच्चाई यह है कि यह लाभ वक़्ती और अस्थाई होता है, बाद में इसका नुकसान स्वार्थी भी उठाता है। हमें इस मानसिकता से निकलने के लिये व्यक्तगत स्तर पर प्रयास करना होगा हर व्यक्ति स्वयं से यह सोचने और विचार करने की शुरूआत करे कि वह जो कुछ भी कर रहा है क्या वह सहीह है, कहीं उसके किसी कर्म से समाज के दूसरे वर्ग का नुकसान तो नहीं हो रहा है। अगर यह सोच हर व्यक्ति के अन्दर पैदा हो जाए तो बहुत सारी बुराइयां स्वयं खतम हो जाएंगी। जो भी इन्सान अपनी किसी बुराई पर जमे रहता है तो इसकी सबसे बड़ी वजह उसका अहंकार है अगर यह इन्सान के मन-मस्तिष्क से खतम हो जाए तो समाज में किसी तरह की विसंगति नहीं पैदा हो गी और समाज में अम्न व शान्ति ही का वातावरण होगा और आज का इन्सान इसी अम्न व शान्ति की तलाश में है अल्लाह दुनिया के हर इन्सान और देश को अम्न व शान्ति नसीब करे।

❑ ❑ ❑

चमन अपना बहुत है याद आता

वतन अपना बहुत है मुझको भाता
चमना अपना बहुत है याद आता
अगर जन्नत ही है मतलूब तुम को
शहादत की लहू में तू नहा जा
जो आये कुछ हरफ मिल्लत पे तेरी
तो फिर पैग़ाम हक़ पे हो फिदा जा
दो राहे खाड़ी है यह उम्मत ही सारी
उसे सीधे रस्ता बताता चला जा
करे गर गैर तुझ से बे वफाई
वफादारी तू अपनी खुद बता जा
वफादारी की वह तुझ से सनद ले
असर ईमान का अपना देखा जा
वतन की याद गर तुम को सताये
दुआयें ख़ूब कर, गरदिश में आ जा
वतन पर आंच गर कुछ भी जो आये
सरापा जोश हो और तिलमिला जा
फिदाकारी व जां निसारी दिखा कर
वतन की ख़ाक को खुद खूं पिला जा
समन्दे शौक़ को महमीज़ करके
वतन की खाक में असग़र समा जा

असग़र अली इमाम महदी सलफी
अमीर
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

कलिमए तौहीद की फज़ीलत

सालेह बिन फौज़ान

कलिमए तौहीद के बड़े फज़ाइल हैं और अल्लाह तआला के यहां इसका खास मक़ाम है जो शख्स सच्चे दिल के साथ कलिमए तौहीद का इकरार करता है अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाखिल फरमाएंगे और जो शख्स झूठ से कलिमए तौहीद का इकरार करता है तो दुनयावी लिहाज़ से उसका खून और उसका माल महफूज़ है लेकिन अल्लाह के यहां उसका मुहासबा होगा।

यह कलिमा निहायत मुख्तसर है उसके हरफ कम हैं ज़बान से उसे अदा करना ज़्यादा मुश्किल नहीं अलबत्ता वज़न के लिहाज़ से यह बहुत ज़्यादा वज़नी है।

अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः

मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में दुआ करते हुए अर्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ऐसे दुआइया कलिमात से आगाह फरमा जिनके साथ मैं तेरा ज़िक्र करूं और तुझ से दुआ मांगूं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फरमाया ऐ मूसा अगर सातों आसमान और मेरे अलावा जो कुछ उनमें मौजूद हैं और सातों ज़मीनें तराज़ू के एक पलड़े में रख दी जायें और कलिमए तौहीद ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' दूसरे पलड़े में रख दिया जाये तो कलिमए तौहीद वाला पलड़ा झुक (भारी पड़) जायेगा। (मुसतदरक हाकिम, इब्ने हिब्बान)

इस हदीस से मालूम हुआ कि ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' ही सबसे बेहतरीन ज़िक्र है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा की हदीस में मरफूअन ज़िक्र है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

अरफा के दिन की दुआ तमाम दुआइया कलिमात से बेहतर है और सबसे बेहतर दुआइया कलिमात वह हैं जिनके साथ मैं दुआ करता हूं और मुझ से पहले अंबिया अलैहिस्सलाम दुआ करते थे। वह दुआ यह हैः

तरजमाः सिर्फ अल्लाह तआला ही माबूदे बरहक है वह तनहा है उसका कोई शरीक नहीं इसी के लिए बादशाहत है इसी के लिए हर किस्म की हम्द व सना है और वह हर चीज पर क़ादिर है।

वज़न में इस कलिमा के भारी होने पर वह हदीस दलील है जिसको इमाम तिर्मिज़ी ने ज़िक्र किया है और सनद के लिहाज़ से उसे हसन करार दिया है। और इमाम नसई और इमाम हाकिम ने भी उसे बयान किया है। इमाम हाकिम ने इसको मुस्लिम की शर्त पर सहीह क़रार दिया है।

इस रिवायत को अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने बयान किया है कि नबी स० ने फरामयाः

मेरी उम्मत में से एक शख्स को क़यामत के दिन तमाम मख़लूक के सामने बुलाया जायेगा औरउसके सामने उसके आमाल के निन्नावे दफातिर फैला दिये जायेंगे हर दफतर की वुसअत (फैलाव) जहाँ तक आँख देख सके, तक होगी। फिर उससे पूछा जायेगा कि क्या तू इन आमाल

में से किसी अमल को गलत क़रार देता है? वह जवाब देगा ऐ मेरे परवर दिगार! नहीं फिर उससे पूछा जायेगा कि क्या अपने इस अमल पर तुझे कुछ उज़्र है? या तेरी कोई नेकी है? वह डरते हुए जवाब देगा बिल्कुल नहीं चुनानचा उसे आगाह किया जायेगा कि क्यों नहीं बिला शुब्हा हमारे पास तेरे नेक आमाल हैं तो तुझ पर हरगिज़ जुल्म नहीं होगा। चुनानचे इन नेक आमाल में से कागज़ का एक पुरज़ा निकाला जायेगा जिस में तहरीर होगा।

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला ही माबूदे बरहक़ है और मैं यह भी गवाही देता हूं कि मुहम्मद स० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

वह शख्स बोल उठेगा ऐ मेरे परवरदिगार! इन दफातिर के मुकाबला में उस पुरज़ा की क्या हैसियत है? उससे कहा जायेगा कि तुझ पर हरगिज़ जुल्म नहीं होगा। चुनानचे इन तमाम दफातिर को एक पलड़े में और कागज़ के पुरज़े को एक पलड़े में रखा जायेगा दफातिर का पलड़ा हल्का हो जायेगा और कागज़ का पुरज़ा वज़नी साबित होगा। तिर्मिज़ी

इस अज़मत वाले कलिमा के बहुत से फजाइल हैं इन में से बाज़ का ज़िक्र हाफिज़ इब्ने रजब ने अपने रिसाले कलिमतुल इख्लास में किया है और हर फज़ीलत के साथ दलाइल भी नक़ल किये हैं इन में से बाज़ फज़ाइल यह हैं।

कलिमए तौहीद जन्नत के हुसूल के लिये कीमत की हैसियत रखता है। जिस शख्स की ज़बान पर इस की जिन्दगी के आखिरी लम्हात में कलिमए तौहीद होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा।

कलिमए तौहीद दोज़ख से निजात दिलाने वाला है।

कलिमए तौहीद तमाम नेकियों में से अज़ीम (बड़ी) नेकी है।

कलिमए तौहीद गुनाहों और खताओं को मिटा देता है मोमिन के दिल में ईमान के दरख्त को हरा भरा रखता है और गुनाहों के दफातिर पर भारी होता है।

कलिमए तौहीद तमाम परदे खत्म करते हुए अल्लाह की बारगाह में रसाई का ज़रिया है इस कलिमा का जिक्र करने वाले इंसान की अल्लाह तआला तसदीक फरमाते हैं और अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने जिन बातों को अफजल कहा है इन तमाम से यह कलिमा अफज़ल व बुलन्द है।

कलिमए तौहीद तमाम जिक्र व अज़कार से अफज़ल है।

कलिमए तौहीद को तमाम आमाल पर फज़ीलत हासिल है उसका ज़िक्र करने से कई गुना सवाब हासिल होता है और उसका सवाब गुलामों को आज़ाद करने के बराबर करार दिया गया है और उसका विर्द करने वाला शैतान के वसवसों से महफूज़ रहता है।

कलिमए तौहीद कब्र की वहशत और मैदाने महशर (परलय) की हौलनाकियों से बचाने वाला है। ईमान वाले जब कबरों से उठ खड़े होंगे तो कलिमए तौहीद का विर्द (पढ़ते) हुए उठ खड़े होंगे।

कलिमए तौहीद के फजाइल में से इसकी एक खास फज़ीलत यह भी है कि जो शख्स उसका विर्द करता है कियामत के दिन उसके सम्मान में जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे जन्नत के जिन दरवाज़ों से भी वह दाखिल होना चाहेगा उसका इस्तकबाल किया जायेगा।

कलिमए तौहीद का विर्द करने वालों ने अगर इसके हुकूक की अदायगी में कोताही की होगी और इस वजह से उन्हें दोज़ख में दाखिल कर दिया गया होगा तो आखिर कार उन्हें इस कलिमा के तुफैल दोज़ख से निकाल कर ज़रूर जन्नत में दाखिल कर दिया जायेगा।

❑ ❑ ❑

प्रोफ़ेसर डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान साहब का इन्तेक़ाल महान दीनी एवं इल्मी ख़सारा

दिल्ली २३ अगस्त २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने मदीना मुनौवरा के मुहद्दिस, मस्जिद नबवी के अध्यापक, लेखक और विभिन्न किताबों के संकलनकर्ता और जामिया इस्लामिया मदीना मुनौवरा के पूर्व डीन फैकल्टी आफ हदीस प्रोफेसर डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी के इन्तेकाल पर गहरे रंज व अफसोस का इज़हार और उनकी मौत को महान दीनी व इल्मी ख़सारा क़रार दिया है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी प्रसिद्ध लेखक और शोध ार्कता थे। उन्होंने पूरी जिन्दगी को कुरआन व हदीस की खिदमत में समर्पित कर दिया था। वह एक दयालु अध्यापक और बाकामल प्रशिक्षक थे। वह आचरण और निस्थार्थ के उच्च्व दर्जा पर विराजमान थे। कुरआन व हदीस से सच्ची मुहब्बत और दिली लगाव था। यूं तो उन्होंने विभिन्न विषयों पर किताबें लिखीं लेकिन १६ हज़ार सहीह हदीसों पर आधारित अल जामिउल कामिल फिल हदीसिल शामिल और कुरआन मजीद की इन्साइक्लोपीडिया उनका सबसे बड़ा कारनामा है। इसके अलावा विभिन्न भाषाओं पर उनकी किताबें और कृत मौजूद हैं।

प्रोफेसर आजमी व्यापक शख्सियत के मालिक थे वह आजमगढ़ यूपी के एक प्रसिद्ध गैर मुस्लिम घराने में पैदा हुए थे। उन्होंने शिबली कालेज आज़मगढ़, जामिया दारूस्सलाम उमराबाद, जामिया इस्लामिया मदीना, जामिया उम्मुल कुरा मक्का जैसी पाठशालाओं से उच्च्व शिक्षा प्राप्त की और जामियतुल अज़हर से डाक्ट्रेट की डिगरी हासिल की। १३९६ हिजरी में जामिया इस्लामिया मदीना में प्रोफेसर हो गये इस के बाद हदीस फैकल्टी में डीन के पद पर विराजमान हुए इसके अलावा विभिन्न तालीमी एदारों से सम्बद्ध रहे। क्षात्रों की माली मदद, मेहमान नवाज़ी और ओलमा का सम्मान करने में आप अपनी मिसाल आप थे। इधर कुछ दिनों से सख्त बीमार थे बीमारी ही की हालत में ३० जुलाई २०२० को इनका निधन हो गया। इमामे हरम फजीलतुश्शैख अहमद बिन अली अल हुजैफी ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। वह अपने पीछे नेक औलाद, शिष्य और इल्मी किताबों का जो महान सम्पदा छोड़ गये हैं वह सब उनके लिये सदक़ए जारिया होंगे। इन्शाअल्लाह

अल्लाह प्रोफेसर साहब की मग्फिरत फरमाए, उनकी सेवाओं को कुबूल करके जन्नतुल फिरदौस में ऊंचा मक़ाम अता करे। पसमांदगान में बेवा, बेटे इंजीनियर अहमद, डा० असअद, डा० उसैद और बेटी फातिमा और उन के शौहर और तमाम रिश्तेदारों और संबन्धियों को सबरे जमील अता फरमाए और मुसलमानों और हम सबको उनका अच्छा विकल्प अता फरमाए। आमीन

प्रेस रिलीज के मुताबिक मर्कज़ी जमीअत के अन्य जिम्मेदारों, सदस्यगण और कार्यकर्ताओं ने भी गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनकी मग्फिरत और दर्जात की बुलन्दी के लिये दुआ की है।

(प्रेस रिलीज का सारांश)

(प्रेस रिलीज़)

मस्जिदें खुल जाने के बाद बचाव के उपाय का ध्यान रखें

दिल्ली ७ जून २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि ऐसे अवसर पर जब कि प्रिय देश में कन्टेनमेन्ट ज़ोन के अलावा सभी स्थानों पर ८ जून २०२० ई० से धर्मस्थलों के प्रकरण में मस्जिदें भी खोली जा रही हैं हम सब से पहले अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हैं, इसके बाद सरकारों के इस फैसले का स्वागत करते हुए उनका भी धन्यवाद करते हैं और साधारण व असाधारण लोगों के भी आभारी हैं कि आपने सरकारों, मेडिकल संस्थाओं और समुदायिक संगठनों के निर्देशों और अपीलों पर अमल करते हुए घातक महामारी कोरोना से बचने के लिए समाजी दूरी बनाये रखने के साथ साथ बचाव के उपाय को भी अपनाया और फ़र्ज नमाज़ें, जुमा, तरावीह यहां तक कि ईद की नमाज़ भी घरों में अदा की हम अपने पालनहार से दुआ करते हैं कि वह देश, समुदाय और मानवता को इस घातक महामारी कोविड-१६ से जल्द से जल्द छुटकारा दे और हर तरह की आपदाओं और महामारी से सुरक्षित रखे, चूंकि देश में कोरोना वायरस का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है, सरकारों और मेडिकल विशेषज्ञयों के अनुसार कोरोना के विरूद्ध देर तक जंग जारी रहने की संभावनाएँ हैं इसलिए जीवन के दूसरे विभागों से संबन्धित लोगों के साथ साथ मस्जिदों के प्रबन्धक अइम्मा और नमाज़ियों को भी इस राष्ट्रीय व मानवीय प्रयासों में यथापूर्व अपनी भूमिका अदा करते रहना चाहिए और चूंकि हुकूमत ने कुछ आवश्यक हालात के दृष्टिगत धार्मिक स्थलों, होटलों, रेस्टोरेन्ट, कार्यालयों आदि को खोलने की छूट दी है इसलिए इन तमाम स्थानों सहित मस्जिदों में भी कोविड-१६ से बचने के लिए समाजी दूरी का पालन करते हुए सरकारों और मेडिकल संस्थाओं के निर्देशों औरशरई अहकाम की रौशनी में और ज़्यादा बचाव के उपाय को सुनिश्चित बनाने के प्रयासों को जारी रखना चाहिए मिसाल के तौर पर :

(१) नमाज़ी हज़रात अपने घरों से वज़ू बनाकर मस्जिद आयें और आवश्यक हालात में ही मस्जिद के वज़ू खाने और बाथरूमों का प्रयोग करें, बल्कि आम हालात में इन्हें बन्द रखना ही ज़्यादा उचित है। (२) मस्जिद की चटाइयों और क़ालीनों को हटा दिया जाये और फर्श पर नमाज़ें अदा की जायें। फ़र्श पर नमाज़ पढ़ने से विवश हज़रात मुसल्ला अपने साथ लायें। इसी तरह मस्जिद में रखी हुई चीज़ों जैसे कि क़ुरआन, किताबें, कुर्सी, पंखे और लाइट के बटन वगैरह को हाथ न लगायें। (३) सुन्नतों और नफिल नमाज़ों का एहतमाम घरों में करें, मस्जिदों में सिर्फ फर्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ें। (४) अज़ान और इक़ामत के दरमियान सिर्फ ५ मिनट का गेप रहे ताकि ज़्यादा देर तक इकटठा रहना संभव न हो सके। (५) सफबन्दी में दायें बायें और आगे पीछे स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से तय किये हुए दूरी का ध्यान रखें। सफ में एक साथ मिल कर खड़े होने की अहमियत के बावजूद इस तरह के असाधारण हालात में ओलामा ने दूरी के साथ सफबन्दी के जवाज़ (वैधता) का फ़तवा

दिया है। (६) कोशिश करें कि जुमा का खुतबा और जमाअत १५ से २० मिनट में मुकम्मल हो जाये। (७) मस्जिद में हाथ मिलाना और गले मिलने वगैरह से बचें। (८) अगर मस्जिद में ए.सी लगी हो और इसका प्रयोग आवश्यक हो तो इसका टेम्प्रेचर २४ और ३० डिग्री के बीच ही रखें। (६) सरदी, जुकाम, खांसी और बुखार से ग्रस्त लोग फ़र्ज़ नमाज़ें और जुमा घरों में ही अदा करें। (१०) औरतें, ६५ साल से ज़्यादा आयु के मर्द और १० साल से कम आयु के बच्चे अनिवार्य तौर पर घरों में ही नमाज़ पढ़ें। (११) मस्जिद में (नमाज़ की हालत में) या बाहर मासक का इस्तेमाल ज़रूर करें। (१२) मस्जिद के फर्श को दिन में कम से कम दो बार डिटरजेन्ट पाउडर या फिनाइल वगैरह कीटाणुनाशक पदार्थों से अवश्य धोयें और आस पास की सफाई सुथराई का अत्यन्त ख्याल रखें। (१३) मस्जिद में दाखिल होने और बाहर निकलते वक़्त दरवाज़ों पर भीड़ न लगायें बल्कि दूरी रखें। संभव हो तो दाख़िल और निकलने के लिए अलग अलग दरवाज़े इस्तेमाल करें इसी तरह मस्जिद में दाखिल होने से पहले और निकलने के बाद अपने हाथों को सैनीटाइज़ ज़रूर करें। (१४) जूते चप्पल अपनी गाड़ियों में उतारें और अगर यह संभव न हो तो इसे कीयर बैग में दूरी पर रखें। (१५) मस्जिद में आने वाले तमाम नमाज़ी हज़रात हुकूमत के आरोग्य सेतु ऐप को ज़रूर डाउन लोड करें। (१६) इनके अलावा भी सरकार और मेडिकल विशेषज्ञों के निर्देशों का पालन करें।

सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि इन तमाम बचाव के उपायों का पालन करने के साथ अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास रखें दुआ का सिलसिला जारी रखें अल्लाह तआला देश, समुदाय और मानवता को घातक महामारी कोरोना वायरस आदि से छुटकारा दे और हम सब की सुरक्षा फ़रमाये। आमीन

जारी कर्ता
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक
इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक
दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

ईमान क्या है

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह०

सहीह बुखारी की किताबुल ईमान में से सिर्फ चन्द हदीसें यहां दर्ज की जाती हैं ताकि अन्दाज़ा हो सके कि ईमान और इस्लाम हकीकत में क्या है। मिसाल के तौर पर

१. मुसलमान वह है जिस के हाथ और ज़ुबान से मुसलमान को कोई नुकसान न पहुंचे और मुहाजिर वह है जो अल्लाह की मना की हुई हर चीज़ को छोड़ दे।

२. उस वक़्त तक हकीक़त में कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वही बात न पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है।

३. जिस में तीन बातें हो उसने ईमान की हलावत (मिठास) को पा लिया।

कः अल्लाह और रसूल उसके नज़दीक सब चीज़ों से बढ़ कर प्रिय हों।

खः हर व्यक्ति के साथ केवल अल्लाह के लिये मुहब्बत करे यानी मुहब्बत के साथ कोई अपना मकसद व मतलब जुड़ा हुआ न हो।

गः इस्लाम से फिर जाना उतना ही बुरा मालूम हो जितना आग में डाला जाना।

४. तीन बातें जिसने अपने अन्दर जमा कर लीं तो उसने ईमान को जमा कर लियाः

कः अपने आपके मुक़ाबले में इन्साफ़ पर स्थापित व काइम रहना।

ख़ दुनिया में अम्न व सुरक्षा और सत्य फैलाना।

गः तंगदस्ती के बावजूद अल्लाह की राह में खर्च करना।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कौन सा इस्लाम बेहतर है। फरमाया खाना खिलाना और सबको सलाम कहना यानी सलामती की दुआ देना चाहे जान पहचान हो या न हो।

५. खुद अबू ज़र ग़िफारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अपने गुलाम को गाली दे। अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुन लिया और फरमायाः अबू ज़र अभी तुम जाहिलियत (अंधकाल) में बाकी हो। गुलाम (सेवक) तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया है। जिसका भाई अधीन हो उसे चाहिए कि भाई को वैसा ही खिलाए जैसा खुद खाए वैसा ही पहनाए जैसा खुद पहने और भाई से ऐसा काम न ले जो उससे न हो सके कोई सख्त काम हो तो स्वयं उस की मदद करे।

७. शरीर में गोश्त का एक टुकड़ा है जब वह दुरूस्त रहता है तो पूरा शरीर स्वस्थ रहता है और जब वह बिगड़ जाए तो सारा शरीर बिगड़ (अस्वस्थ) हो जाता है सुनो, वह दिल है।

८. जिस में चार बातें हों वह मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) हैः

कः एमानत रखी जाए तो ख्यानत करे

खः बात कहे तो झूठ बोले

खः वादा करे तो उसे पूरा न करे

गः झगड़े तो असत्य की तरफ चला जाए। इन में से कोई भी बात किसी में हो तो निफाक़ (कपटाचार) की एलामत होगी जब तक कि वह इसे छोड़ न दे।

९ः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा प्रिय कर्म वह है जिस को बराबर किया जाए चाहे वह थोड़ा हो।

१०ः किताबुल अदब में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार फरमायाः खुदा की क़सम वह ईमान नहीं लाया, खुदा की क़सम वह ईमान नहीं लाया, खुदा की क़सम वह ईमान नहीं लाया। पूछा कौन ऐ अल्लाह के रसूल! फरमाया जिस का पड़ोसी उस की बुराइयों से अम्न (सुख) में न हो।

इन उपदेशों पर गौर कीजिये और अन्दाजा कीजिये कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मानवता को किस रास्ते पर चलने की दावत दी। क्या इस के सिवा विश्व शान्ति और मानवता के कल्याण का कोई और रास्ता हो सकता है?

(रसूले रहमत, पृष्ठ ६८१ से ६८३)

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी

में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

कुरआन करीम की खूबियाँ

मुहम्मद बिन जमील जैनू

१. कुरआन करीम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। यह सूरे फ़ातिहा से शुरू होकर सूरे अन्नास पर ख़तम है। यानी इस कुरआन की आखिरी सूरत सूरे अन्नास है।

२. नमाज़ वगैरह में इस की तिलावत और पढ़ने से सवाब मिलता है जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह की किताब (कुरआन) का एक अक्षर भी पढ़ा तो उसे एक से लेकर दस तक नेकियां मिलती हैं मैं नहीं कहता कि अलिफ लाम मीम एक अक्षर है बल्कि अलिफ एक अक्षर है, लाम एक अक्षर है और मीम एक अक्षर है। (इस हदीस को तिर्मिज़ी ने रिवायत की है)

३. अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने सूरे फातिहा नहीं पढ़ी उसकी नमाज़ ही नहीं हुई''। (बुखारी, मुस्लिम)

४. कुरआन करीम किसी भी तरह के परिवर्तन और शब्द विकृति से सुरक्षित है। अल्लाह तआला ने फरमायाः हमने ही इस कुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इसके रक्षक हैं'' (सूरे हिज्र-९) इसके अलावा आसमानी किताबें उनके मानने वालों के संशोधन और शब्द विकृति (तहरीफ) से सुरक्षित नहीं रह सकीं।

५. कुरआन मजीद विरोध ाभास से पवित्र है। अल्लाह तआला ने फरमायाः ''क्या यह लोग कुरआन में गौर नहीं करते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो यक़ीनन इसमें बहुत कुछ इख्तेलाफ पाते।'' (सूरे निसा-८२)

६. कुरआन को याद करना आसान कर दिया गया। अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमाया ''और हमने नसीहत के लिये कुरआन को आसान कर दिया है'' (सूरे क़मर-३२)

७. अल्लाह तआला ने अरबों को कुरआन की एक सूरे या एक आयत के समान लाने के लिये चुनौती दी लेकिन सबने इसके सामने घुटने टेक दिए। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या यह लोग यूं कहते हैं कि आप ने इसको गढ़ लिया है। आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इसके समान एक ही सूरत लाओ।'' (सूरे यूनुस-३८)

८ः कुरआन को याद करना आसान कर दिया गया। अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमायाः ''और हम ने नसीहत के लिये कुरआन को आसान कर दिया'' (सूरे कमर-३२)

९ः कुरआन की तिलावत करने वाले पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब

भी कोई कौम अल्लाह की किताब पढ़ने और उसकी तिलावत करने के लिये अल्लाह के किसी घर में जमा होती है तो उनके ऊपर सकीनत और वक़ार नाज़िल होती है। अल्लाह की रहमत उन पर निछावर होती है और फरिश्ते उन्हें घेरे रखते हैं और अल्लाह उनका जिक्र अपने पास मौजूद फरिश्तों में करता है।

१०. कुरआन शिर्क और निफाक़ जैसी घातक बीमारियों से बचाता है और इसके अन्दर बाज़ आयतें और सूरतें भी शरीर को रोग मुक्त कर देती हैं जैसे सूरे फातिहा और सूरे फलक़ व सूरे अन्नास।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसी चीज़ आई है जो नसीहत है और दिलों में जो रोग है उनके लिये शिफा है और रहनुमाई (मार्गदर्शन) करने वाली है और रहमत है ईमान लाने वालों के लिये'' (सूरे यूनुस-५७)

अल्लाह ने फरमायाः

''यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिये तो सरासर शिफा और रहमत है''। (सूरे बनी इस्राईल-८२)

११. कुरआन क्यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये सिफारिश करेगा।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''कुरआन पढ़ करो क्योंकि कुरआन क्यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये सिफारिशी बन कर आएगा। (मुस्लिम)

१२. कुरआन को सीखने और सिखाने वाला सबसे बेहतर है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से बेहतर वह शख्स है जो कुरआन को सीखे और सिखाये'' (बुखारी)

१३. अल्लाह ने कुरआन को मार्गदर्शक और खुश खबरी देने वाला बनाया।

अल्लाह ने फरमाया ''और यक़ीनन यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है जो बहुत ही सीधा है और ईमान वालों को जो नेक आमाल करते हैं इस बात की खुशखबरी देता है कि उनके लिये बहुत बड़ा अज्र (पुण्य) है'' (सूरे इसरा-९)

१४. कुरआन दिलों को सुकून और इतमिनान अता करता है और यक़ीन को मज़बूत करता है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''जो लोग ईमान लाए उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से इतमीनान हासिल करते हैं याद रखो अल्लाह के ज़िक्र ही से दिलों को तसल्ली हासिल होती है''। (सूरे रअ्द-२८)

१४. कुरआन की अधिकतर सूरतों में एकेश्वरवाद की तरफ खास तौर पर निमंत्रण (दावत) दी गयी है। अल्लाह का फरमान हैः ''अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को ज़र्रा बराबर भी शरीक न ठेहराओ''

सूरे जिन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''आप कह दीजिये कि मैं तो सिर्फ अपने रब ही को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता।'' (सूरे जिन्न-२०)

इस्लाम में जानवरों के अधिकार

मुहम्मद इक़बाल कीलानी

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''जिस शख़्स ने जानवर का मुस्ला किया और तौबा किए बिना मर गया तो क्यामत के रोज़ अल्लाह उसका मुस्ला करेगा'' (मुसनद अहमद)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक गधे को देखा जिस का चेहरा दाग़ा गया था और उसके नथुनों से खून बह रहा था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''अल्लाह उस पर लानत फरमाए जिस ने उसे दाग़ा है'' फिर फरमाया ''न चेहरे पर दागा जाए न चेहरे पर मारा जाए'' (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा ने चन्द लड़कों को देखा कि वह मुर्गी को बाँध कर निशाना लगाने की मश्क (अभ्यास) कर रहे हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने कहा कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख़्स पर लानत की है जो किसी जानवर को निशाना बनाए। (बुखारी, मुस्लिम)

एक औरत ने बिल्ली को बांध कर रखा और उसे खाने पीने के लिये कुछ नहीं दिया यहाँ तक कि वह मर गई पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बिल्ली पर अत्याचार करने की वजह से वह जहन्नम में चली गई । (सहीह मुस्लिम)

एक आदमी ने यात्रा के दौरान कुवें से पानी पिया वहीं पर एक प्यासा कुत्ता भी था उसने अपने जूते के ज़रिया कुवें से पानी निकाल कर कुत्ते को भी पिलाया इसकी वजह से अल्लाह ने इस शख़्स को बख़्श दिया। (सहीह बुखारी)

एक सफर के दौरान किसी के ऊंट ने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर अपनी गर्दन झुका दी थोड़ी देर बाद पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि ऊंट का मालिक (स्वामी) कौन है? मालिक हाज़िर हुआ तो आप ने फरमायाः ''यह ऊंट मेरे हाथ बेच दो'' मालिक ने कहा ऐ अल्लाह के पैगम्बर अगर आप को ज़रूरत है तो मैं आपको उपहार में दे रहा हूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे तो ज़रूरत नहीं है असल बात यह है कि इस ऊंट ने काम ज़्यादा लेने और चारा कम खिलाने की शिकायत की है इसलिये इसके साथ नर्मी करो। (शर्हुस्सुन्नह)

एक आदमी आप की खिदमत में हाज़िर हुआ उसकी चादर में परिन्दे (पक्षी) थे उसने कहा ''मैं पेड़ों के झुण्ड से गुज़र रहा था मुझे आवाज़ सुनाई दी तो मैंने इन बच्चों को पकड़ लिया इतने में इन परिन्दों की माँ आकर मेरे सर के ऊपर उड़ने लगी मैंने चादर खोली तो वह भी आकर बैठ गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहां से बच्चों को पकड़ा है उनको वहीं ले जाओ और वहां रखा आओ बच्चों को भी और इन बच्चों की मां को भी। (अबू दाऊद) ***''तालीमाते कुरआन मजीद''*** से साभार